जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 185
दिनांक 23.11.2022

जनेकृविवि के नवनियुक्त कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा का हुआ भव्य स्वागत एवं अभिनंदन

छात्र–छात्राओं ने आतिशबाजी, फूलों की वर्षा एवं तालियों की गड़गड़ाहट एवं जयकारे के साथ डॉ. मिश्रा का किया स्वागत

दिनभर फूलों की बारिश, भव्य स्वागत एवं अभिनंदन का सिलसिला रहा जारी

जबलपुर 23 नवम्बर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के 16वें कुलपति के रूप में, डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने बुधवार को पदभार ग्रहण किया। विश्वविद्यालय में डॉ. मिश्रा के आगमन पर विश्वविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राएं, श्रमिक, वैज्ञानिकों द्वारा डॉ. मिश्रा को फूलों की वर्षा एवं आतिशबाजी एवं पटाखों की गूंज, ढोल नगाड़े एवं जयकारे के साथ स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस दौरान दोनों ओर बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं ने श्रृंखला बनाकर डॉ. मिश्रा का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय के कुलपति ऑफिस तक भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे। डॉ. मिश्रा सर्वप्रथम विश्वविद्यालय में स्थित भगवान हनुमान जी के मंदिर पर माथा टेका एवं पूजा करने के उपरांत कुलपति के कक्ष में पहुंचकर पदभार ग्रहण किया। आज डॉ. मिश्रा के पदभार ग्रहण करने में भूतपूर्व कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने गुलदस्ता देकर डॉ. मिश्रा को कुलपति का पदभार ग्रहण कराया एवं मिठाई खिलाकर उन्हें शुभकामनाएं एवं बधाई दी। इस दौरान कुलसचिव रेवासिंह सिसोदिया की उपस्थिति रही। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, संचालक, कुलसचिव, लेखा नियंत्रक, सुरक्षा अधिकारी, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी समस्त वैज्ञानिक, समस्त विभागों के कर्मचारी मजदूर भाई, माली, सुरक्षाकर्मी एवं विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं द्वारा नवागत कुलपति डॉ. पी. के. मिश्रा का भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। पदभार ग्रहण करने के उपरांत कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा एवं भूतपूर्व कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने मिलकर कुलपति सचिवालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा कृषि स्नातक एवं स्नातकोत्तर की शिक्षा जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय से की। इसके उपरांत विद्यावाचस्पति (पीएचडी) की उपाधि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से प्राप्त करने के बाद सहायक प्राध्यापक के रूप में वर्ष 1980 में प्रथम सेवा विश्वविद्यालय की कॉस्ट आफ कल्टीवेशन योजना (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़) कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंधन विभाग में प्रारंभ की। वर्ष 1999 में प्राध्यापक एवं कृषि मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली के कॉस्ट आफ कल्टीवेशन स्कीम के प्रोजेक्ट एप्लीकेशन ऑफ कास्ट आफ कल्टीवेशन ऑयल सीड (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ) के 4 वर्षों तक परियोजना समन्वयक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई। वर्ष 2001 में आप कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र विभाग के यूनिवर्सिटी हेड के रूप में पदभार ग्रहण किया। 9 वर्ष के लंबे अंतराल तक आप यूनिवर्सिटी हेड की जिम्मेदारी बखूबी निभाई, साथ ही आपने विभाग के विभागाध्यक्ष रहते हुए, इंस्टीट्यूट आफ एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट के मास्टर डिग्री हेतु आपके माध्यम से कार्य प्रारंभ कराया गया। विश्वविद्यालय में संचालित एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स सेंटर (भारत सरकार) में आपने डायरेक्टर के रूप में कार्य किया, इसके साथ ही 1 वर्ष तक विश्वविद्यालय के कुलसचिव, एवं आप कृषि महाविद्यालय जबलपुर के अधिष्ठाता के पद पर कार्य किया। 2009 में आप अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ में अपनी सेवाएं प्रारंभ की, और 2009 से 2012 तक आपने अपनी डीन के रूप में टीकमगढ़ में सेवाएं दी। इसके उपरांत

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

संचालक शिक्षण का दायित्व वर्ष 2013 में 1 साल तक आपने निभाया, इसके उपरांत संचालक विस्तार सेवाएं, जिसके अंतर्गत समस्त कृषि विज्ञान केंद्र जो कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित होते हैं। आपने संचालक के रूप में 3 वर्षों तक मार्गदर्शन दिया। वर्ष 2015 से लेकर 2019 तक आपने अधिष्ठाता कृषि संकाय जैसे अति महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदारी वाले पद पर 4 साल तक अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान किया। इसके उपरांत संचालक अनुसंधान सेवाएं के रूप में आपने शोध को गति, दिशा एवं महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट की फंडिंग में विशेष योगदान रहा। डॉ. मिश्रा द्वारा महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना में बोर्ड मेंबर के रूप में महत्वपूर्ण सेवाएं दी है, एवं सेंट्रल एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी इम्फाल में एकेडमिक काउंसिल के आप सदस्य रहे, इसके साथ ही बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी बनारस के भी आप एकेडमिक काउंसिल के मेंबर के रूप में कार्य किया। राजस्थान लोक सेवा आयोग के विभिन्न पदों की परीक्षाओं में आप एक्सपर्ट के रूप में सेवाएं प्रदान की हैं, लोक सेवा आयोग मैं भी चयन प्रक्रिया हेतु एक्सपर्ट के रूप में सदस्य रहे हैं।

संचालक विस्तार सेवाओं के महत्वपूर्ण पद में कार्य करते हुये, आपने परियोजना समन्वयक की महत्वपूर्ण दायित्व को निभाते हुए 9 करोड़ की एक महत्वपूर्ण परियोजना को मूर्त रूप प्रदान किया। इसके साथ ही संचालक अनुसंधान सेवाओं के रूप में आपने 33 करोड़ से अधिक रुपयों की राज्य स्तरीय एवं आईसीएआर की विभिन्न परियोजनाओं को, इस विश्वविद्यालय को दिलाने में अति उत्कृष्ट भूमिका निभाई। डीआरएस के महत्वपूर्ण दायित्व के दौरान 24 प्रकार की विभिन्न फसलों की किस्मों को किसानों को समर्पित किया। आपने 12 पेटेंट फाइल कराए, जिसमें से कई पेटेंट विश्वविद्यालय को अभी तक प्राप्त हो चुके हैं, दो जीन बैंक आपके कार्यकाल में विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए, जिसमें जीन बैंक जबलपुर एवं पवारखेड़ा को प्राप्त हुआ। आपके अधिष्ठाता कृषि संकाय के दौरान चार महत्वपूर्ण कॉलेजों को प्रारंभ किया गया। इसमें दो हार्टीकल्चर और दो कृषि महाविद्यालय शामिल है, जो वर्तमान में कृषि एवं उद्यान शास्त्र की शिक्षा छात्र–छात्राओं को प्रदान कर रहे हैं। इसमें खुरई, छिंदवाड़ा, रैहली एवं पवारखेड़ा के महाविद्यालय प्रमुख रूप से है। आपके द्वारा लगभग 35 से 40 एमबीए एवं एमएससी के छात्र छात्राओं को चेयरमैन के रूप में गाइड किया गया है। आपके कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार के क्षेत्र में अनुपम कार्यों को प्रकाशन के रूप में विभिन्न प्रकार के 89 पब्लिकेशन किए गए, जिसका लाभ कृषि छात्र एवं किसानों को प्राप्त हो रहा है।

प्राथमिकता के कार्य–

पदभार ग्रहण करने के बाद कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने प्राथमिकताओं के साथ विभिन्न कार्यों को करने की बात कही। इसमें सर्वप्रथम विश्वविद्यालय की वित्तीय व्यवस्था, कैसे सुचारू रूप से बेहतर की जा सकती है। इस विषय पर सभी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक कर, कार्य योजना बनाने की बात कही है, इसके साथ ही कृषि शिक्षा अनुसंधान एवं विस्तार के कार्यों में गति प्रदान करने एवं विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा, उत्कृष्टता एवं अध्ययन के दौरान किसी प्रकार की समस्या ना हो, इस विषय पर भी विशेष ध्यान देने की बात कही। डॉ. मिश्रा ने बताया कि मुझे इसी विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों में कार्य करने का 40 वर्षो का अनुभव प्राप्त है, अतः में विश्वविद्यालय की समस्त बातों को जानता हूं, और आगामी समय में शीघ्रता के साथ सही कार्य योजना एवं दिशा बनाकर, सभी कार्यो का समाधान मिलकर निकालने की बात कही।